Vol III Issue VI March 2014

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.net

Review Of Research
Vol. 3 | Issue. 6 | March. 2014
ISSN:-2249-894X
Available online at www.ror.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

सामंतवादः सामाजिक एवं आर्थिक विकास प्रक्रिया

नीरू

दयाल सिंह सांध्य कॉलेज, दिल्ली सिरसपुर, दिल्ली

सारांश :

यूरोप में नवीं शताब्दी से लेकर तेरहवीं शताब्दी तक थोड़े बहुत परिवर्तन के साथ सामंतवादी प्रशासकीय व्यवस्था पायी जाती है। यहां सामंतवाद के संदर्भ में दो प्रकार के मत दिखाई पड़ते हैं। एक वर्ग इसे प्रशासकीय आवश्यकता का परिणाम मानकर चलता है। इन दोनों मतों में हीं स्पष्ट विभाजक रेखा नहीं दिखाई पड़ती है। स्वरूपगत विश्लेषण के अंतर्गत दोनों एक दूसरे का समर्थन अप्रत्यक्ष रूप से करने लगते हैं। डॉ. विजयकुमार अग्रवाल इस बात को आगे बढ़ाते हुए कहते हैं कि ''यूरोपीय सामंतवाद रोमन और जर्मन की परम्परा से उत्पन्न स्वाभाविक व्यवस्था है, और वही सारे यूरोप की देन भी है।''[1]

प्रस्तावना :

यूरोप में सामंतवाद का विकास सामान्यतः इन परिस्थितियों में हुआ। रोमन साम्राज्य के टूटने के बाद उस पर पश्चिमी यूरोप की असभ्य जातियां–प्रफेंक लोम्बार्ड तथा गोथ इत्यादि ने अधिकार कर लिया। इन लुटेरी जातियों ने समाज और सरकार को सर्वथा नवीन रूप दिया। पांचवीं शताब्दी तक रोमन साम्राज्य अपनी रक्षा करने में असमर्थ हो चुके थे। जर्मन की बर्बर जातियों के आक्रमण के कारण इटली के गांव असुरक्षित से हो गए थे, क्योंकि सरकार सुरक्षा करने में समर्थ नहीं थी जिसके परिणामस्वरूप जनता ने अपनी सुरक्षा के लिए शक्तिशाली वर्ग से समझौता किया। यही शक्तिशाली वर्ग आगे चलकर सामंतवाद के आधर बने। इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका में भी सुरक्षा की आवश्यकता पर विशेष बल दिया गया है। उसके अनुसार ''सामंतवाद के जन्म में सुरक्षा की भावना प्रधन थी। संभावित विदेशी आक्रमण तथा सरकारी अपफसरों की अनियंत्रित मांगों से छुटकारें के लिए एक ऐसी सत्ता की आवश्यकता अनुभव की जा रही थी, जो उन्हें किसी भी कीमत पर सुरक्षा प्रदान कर सके।''[2]

यूरोप में सामंतवाद के उदय के पीछे एक और जबरदस्त कारण भी रहा हैं साम्राज्य के दूरस्थ विस्तार के कारण सम्राट पूरे साम्राज्य का सुचारू रूप से संचालन करने में असमर्थ था। इसलिए सत्ता का विकेन्द्रीकरण हो गया जो आवश्यक कार्य होने के साथ लोकतंत्रा की दिशा में एक कदम था। हेनरी एस. लूकस ने इसके जन्म का कारण प्रशासकीय आवश्यकता मानते हुए कहा है कि ''Fedualism was government by noble fief/ holders'' अन्य विचारकों ने प्रशासन की व्यवस्था के लिए उसके विकेन्द्रीकरण की आवश्यकता का अनुभव किया है।

धीरे–धीरे जनता को सुरक्षा प्रदान करने वाला यह शक्तिशाली वर्ग अर्थात् सामंतवाद सम्पूर्ण यूरोप में पफैल गया। उसका केन्द्र कैरोलिगियन साम्राज्य में था। वहां से वह 'पवित्रा रोमन' साम्राज्य के द्वारा पूर्वी जर्मनी और डेनमार्क पहुंचा। दक्षिणी प्रफांस में सामंतवाद का प्रभाव स्पेन पर पड़ा। बाद में सामंतवाद प्रफांस में अपने उत्कर्ष रूप में दिखाई पड़ता है। नारमन विजय के पफलस्वरूप दक्षिणी इटली और इंग्लैण्ड भी इसके पूर्ण प्रभाव में आ गए। इस प्रकार सम्पूर्ण यूरोप में एक नए ढंग की व्यवस्था का सूत्रापात हुआ और यही नई व्यवस्था सामंतवाद कहलायी जो लगभग आठवीं शताब्दी से तेरहवीं शताब्दी तक समस्त यूरोप में अपने पूर्ण वैभव के साथ छाई रही।

Title: *सामंतवादः सामाजिक एवं आर्थिक विकास प्रक्रिया* ,
Source: Review of Research [2249-894X] *नीरू* **yr:2014 | vol:3 | iss:6**

इसी के संदर्भ में डॉ. रामशरण शर्मा को मत उद्धृत किया जा सकता है –''उनका राजनीतिक और प्रशासनिक ढांचा भूमि अनुदानों के आधर पर गठित था और उसी ढांचा कृषि दासत्व प्रथा के आधर पर। इस प्रथा के अधीन किसान भूमि से बंधे होते थे और भूमि के मालिक वे जमींदार होते थे जो असली काश्तकारों और राजा के बीच कड़ी का काम करते थे।[3] डी.डी.आर. भण्डारी भी ''सामतंवाद को संवेदात्मक सरकार का एक रूप मानते है जिसमें सामंत मध्यस्थता का काम करते थे। कुछ इन्हीं आधरों को पुष्ट करते हुए डॉ. सतीशचन्द्र का मत है कि ''यूरोप में सामंतवाद का सम्बन्ध दो व्यवस्थाओं से था जिनमें से एक कृषि दास व्यवस्था तथा दूसरा आधर था सैनिक संगठन।''[4] इस आधर पर कृषि दासत्व एवं सैनिक संगठन दोनों सामंतवाद के मुख्य आधर है। इस विश्लेषण के आधर पर कहा जा सकता है कि सामंतवाद यूरोप में भूमिव्यवस्था से सम्बन्धित विकेन्द्रीकरण पर आधरित एक ऐसी प्रशासकीय व्यवस्था थी जिसमें सामंत सर्वोच्च सत्ता और किसानों के मध्य पुल था, जो दोनों पार्टी से निश्चित अनुबंधें के माध्यम से जुड़ा होता था।

यूरोप में राज्य सेवा करने के पुरस्कार स्वरूप सामंतों को भूमि दी जाती थी और उन सामंतों की प्रशासनिक देख–रेख में जितना क्षेत्रा होता था, उसका पूरा राजस्व उन्हीं को प्राप्त होता था किन्तु वह अपने अधीनस्थ लोगों के प्राप्त कर में से अपने प्रभु को नियमित रूप से कुछ नज़र भेजता रहेगा। राजा अपफसरों को नकद वेतन के बदले जमीन देता था। जमीन उन अन्य लोगों को भी दी जाती थी जिनको राजा पुरस्कृत करना चाहता था।

इसलिए यूरोपीय सामंतवाद में किसानों को, जमींदारों या उन व्यक्तियों के लिए जिन्हें जमीन दे दी जाती थी और जो सामंती कहलाते थे, काम करना पड़ता था। सामंतों का कर्तव्य राजा के लिए सैनिक एकत्रा करना था।[5] प्रो. सिजविक ने सामंतवाद को चार विभिन्न प्रवृत्तियों का परिणाम माना है। पहली प्रवृत्ति एक मनुष्य की दूसरे मनुष्य के साथ जो उससे उच्चतर स्तर का था, वैयक्तिक संबंधें की थी। अपनी सुरक्षा के दृष्टिकोण से उन्होनें अपने से शक्तिशाली व्यक्ति के साथ सम्बन्ध स्थापित किया जो नागरिकता के नाते न होकर वैयक्तिक था। सरंक्षक और आश्रित एक दूसरे के साथ वैयक्तिक सम्बन्धें के जुड़ाव के कारण बंधे हुए थे। संरक्षक अपने आश्रितों की रक्षा करता था तथा आश्रितों की बढ़ती हुई संख्या के कारण उसका बल बढ़ जाता था।

दूसरी प्रवृत्ति मनुष्य के अधिकार, राजनैतिक स्थान तथा उसकी सामाजिक स्थिति के निर्धरण करने की प्रवृत्ति थी। सामंतवाद में व्यक्ति के राजनैतिक संबंध तथा उसकी सामाजिक स्थिति इस बात पर निर्भर करती है कि वह कितनी भूमि का स्वामी था। तीसरी प्रवृत्ति यह थी कि बड़े–बड़े भूपति अपने प्रदेशों में राजनीतिक सत्ता का प्रयोग करने लगे। यह परिवर्तन क्रमशः हुआ। उन्हें यह अधिकार प्रारम्भ से प्राप्त नहीं था, केन्द्रीय सत्ता की दुर्बलता के कारण जैसे–जैसे उनकी शक्ति बढ़ी, उन्होंने अपने प्रदेश की सुव्यवस्था के लिए अपने अधिकारों को बढ़ाया और उन पर शासन करने लगे। चौथी प्रवृत्ति सामाजिक वर्गों के पार्थक्त की प्रवृत्ति थी राजा अथवा सामंत पर आश्रित व्यक्ति दो प्रकार के होते थे। पहले वे जो सैनिक सेवाओं के बदले राजा या सामंतों से बंधे हुए थे तथा दूसरे वे जो उनकी भूमि पर कृषि या अन्य प्रकार के कार्य करते थे।

श्री एच. एस. डेवीस ने सामतंवाद के स्वरूप को निर्धरित करते हुए इसकी मौलिक प्रवृत्तियों का विश्लेषण करते हुए कहा है कि ''इस व्यवस्था के अंतर्गत व्यक्ति सुरक्षा के दृष्टिकोण से अपने प्रभु से अनुबंधित होता था। वह अपने सामंती प्रभुत से पृथक् अपनी स्वतंत्रा सत्ता की घोषणा नहीं कर सकता था। युध्द सामंती व्यवस्था का प्रमुख सिध्दान्त था। भाई–भाई के विरूध्द और पुत्रा पिता के विरूध्द लड़ने में कोई संकोच नहीं करता था। निम्न वर्ग की दशा भी अत्यन्त शोचनीय थी।''[6] प्रस्तुत दृष्टिकोण में व्यक्ति की सुरक्षा की भावना पर अध्कि बल दिया गया है एवं सामंती सम्बन्धें तथा अनुबन्धें की दृढ़ता की ओर संकेत किया गया है जिस प्रभु से व्यक्ति लाभान्वित होता था, उसके प्रति अपने स्वामी भक्ति का प्रदर्शन करना पड़ता था। व्यक्ति की निजी स्वतंत्राता समाप्त हो जाती थी। हेनी एस_ ल्यूकस के अनुसार ''सामंती संगठन में सामंत को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। प्रत्येक सामंती राजकुमार के अधीन अनेक वेसोल्स होते थे, जो उसे अपनी सलाह तथा युध्द से सहायता देने के लिए प्रतिबंध्ति थे।''[7]

श्री ल्यूकस के मतानुसार राजा और सामंत दोनों की पारस्पारिक अनुबंध्ता सिध्द होती है, जिसका आधर पारस्पारिक आदान–प्रदान था। सामंत राजा को सैनिक सहायता प्रदान करता था, राजा को महत्वपूर्ण परामर्श देकर राजा की मंत्राणा प्राप्त करने का अधिकारी था। बेल्सटर महोदय ने अपने कोश में सामंतवाद के स्वरूप में प्रकाश डालते हुए लिखा है कि ''यह एक ऐसी राजनीतिक व्यवस्था थी जो राजा और सामंत के भूमि से सम्बन्धित पारस्पारिक सम्बन्धें पर आधरित थी तथा जिसमें भूमि प्राप्त कर्ता द्वारा सेवा और आदर – भावना स्वामित्व, सहायता विवाह आदि की घटनाएं प्रमुख थी।''[8]

प्रस्तुत मत में बेवस्टर महोदय ने सामंत और राजा के अनेक सम्बन्धें पर प्रकाश डाला है, सामंत को राजा से भूमि प्राप्त होती थी जिसके बदले में उन्हें राजा के प्रति आदर, सेवाभाव प्रदर्शित करना पड़ता था। यहां तक कि वैवाहिक विषयों में भी उन्हें राजा की स्वीकृति लेनी पड़ती थी। परस्पर सहायता करने के लिए दोनों ही प्रतिबंधित रहते थे।

चैम्बर्स इन्साक्लोपीड़िया में सामंतवाद विषयक मान्यताओं में स्वामी भक्ति और आज्ञा–पालन पर बल देते हुए लिखा गया है कि ''सामंतवाद शब्द यद्यपि समाज व्यवस्था का एक प्रकार है तथा मुख्य रूप से उन व्यक्ति सम्बन्धें की व्याख्या करता है जो जमीन के अधिकार और व्यक्तिगत सम्पति के आधर पर एक व्यक्ति की दूसरे व्यक्ति के प्रति अधीनता प्रकट करते है, तथापि यह व्यक्तिगत सम्बन्धें और नियमों की उस विशिष्ट पध्दति की ओर संकेत करता है जिसमें एक ओर सुरक्षा तथा निर्वाह है तथा दूसरी ओर सेवा तथा आज्ञा पालन है।[9] इस प्रकार सामंत के निर्वाह और

सुरक्षा का उत्तरदायित्व प्रभु पर था। साथ ही सामंत प्रभुत की आज्ञा पालन और सेवा भक्ति से अनुबंधित था। आज्ञा पालन न करने पर राजा केवल सैध्दान्तिक रूप में उससे भूमि वापस लेकर उसे पदच्युत कर सकता था। यह केवल प्रारंभिक सैध्दन्तिक स्वरूप था, किन्तु व्यवहारिक रूप में ऐसा नहीं होता था। कालांतर में यह व्यवस्था बदल गयी। भूमि पहले आजीवन दी जाती थी, बाद में आनुवंशिक अधिकार होने लगा। तब उन्होंने भी प्राप्त भूमि को उन्हीं शर्तों पर प्रदान किया जिन शर्तों पर इन्हें राजा से प्राप्त हुई थी। इस प्रकार सामंती व्यवस्था वंशानुगत रूप से चलने लगी।

पूर्वोक्त मत की पुष्टि के संदर्भ में वह विचार देखा जा सकता है। ''सामंती प्रथा वंशानुगत थी। सामंत की मृत्यु के बाद उसका उत्तराधिकारी उसका स्वामी बनाया जाता था, जो पहले राज्य दरबार में जाकर कुछ भेंट कर राजा के प्रति अपनी स्वामी भक्ति प्रगट किया करता था।''[10]

इस प्रकार राजा द्वारा सामंत को और सामंत द्वारा अपने से नीचे सरदारों को भूमि प्रदान करना वंशानुगत हो गया और सामंतवाद के एक नये स्तर अर्थात् उपसामंतवाद का जन्म होने लगा। कृषकों का सम्बन्ध सीधे राजा से न होकर एक मध्यस्थ कुलीन उच्चवर्ग से होने लगा।[11] सामंतवाद की आनुवंशिकता के विषय में समाज विज्ञान विश्वकोष में बताया गया है कि ''सामंतवाद एक ऐसी आर्थिक पध्दति है यद्यपि मुद्रा का चलन पूर्णतः समाप्त नहीं हुआ था तथापि उसका प्रयोग बहुत कम होता था, धन के रूप में भूमि का प्रयोग किया जाता था। सामंती व्यवस्था का सर्वाधिक महत्वपूर्ण सिध्दान्त आनुवंशिकता का था।[12]

पाश्चात्य सामंतवाद विषयक पूर्वोक्त विद्वानों के मतों का विवेचन–विश्लेषण करने पर जो मुख्य निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं। कहीं तो प्रभु और सामंत के अनुबंधत्मक संबंधें में निहित कानूनी पक्ष पर बल दिया गया है, कहीं सामाजिक पक्ष पर कहीं आर्थिक पक्ष पर, किन्तु कुछ ऐसे सामान्य तत्व भी है जिनका लगभग सभी विचारकों के मतों में संकेत मिलता है। इन सामान्य तत्वों में प्रभु द्वारा भूमि अनुदान और सामंत द्वारा सेवा एवं आज्ञा–पालन। इनके साथ यूरोपीय सामंतवाद के स्वरूप निर्धरण में कृषि दासत्व प्रथा भी एक महत्वपूर्ण तत्व है। इसके अधीन किसान भूमि से बंधे होते थे और भूमि के असली मालिक वे जमींदार होते थे। जो असली काश्तकारों और राजा के बीच कड़ी का काम करते थे। किसान जमीन जोतने के बदले सामंतों को उपज और बेठ–बेगार के रूप में लगान अदा करते थे। इस प्रणाली का आधर आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था थी, जिसमें चीजों का उत्पादन बाजार बाजार में बेचने के लिए नहीं, बल्कि मुख्यतः स्थानीय किसानों और उनके मालिकों के उपयोग के लिए होता था।''[13]

सन्दर्भ

1स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी उपन्यासों में सामंती जीवन, विजय कुमार अग्रवाल, पृ. 45
2The Encyclopaedia Britanica, Vol. 14, p. 204
3भारतीय सामंतवाद, डॉ रामशरण शर्मा, पृ. 1
4मध्यकालीन भारत, भाग – 1, सतीश चन्द्र, पृ. 2
5The Development of European Polity, Sidgwick, p. 202-206.
6An Outline History of World (Oxford), H.A. Davis, pp. 300-304
7Each Feudal Prince had numerous vasals bound to help him with their advice or counsel and to aid him in case of war—A short History of Civilization, Hepry S. Lucas, p. 487
8The System policy which prevailed in Europe in Middle class based upon the relations to oflord to vassal, with the holding of land in feud. The principla incidents of the Feudal system were homage, service of the tenants, wordship marriages, reliefs aids eschead and for faiture, New Collegiate Dictionary (London), Webster's, p. 301.
9Although, the word feudalism in commonly used to designate a kind of society, which is characterized chiefly by personal relationship, subordinate one men to another and by progressive disuntigration of rights, of property in lands. It is better reserved for a system of law and private relationship, which in middle ages implied protection and maintenance on one side and service and obedience on other. Chamber's Encyclopaedia, Vol. V., p. 635
10राजनीतिक विचारों का इतिहास (प्राचीन और मध्यकाल), कन्हैयालाल वर्मा, पृ. 276.
11A short history of civilisation, Henry S. Lucas, p. 378
12Encyclopaedia of social science, vol. 5-6, pp. 204-207
13भारतीय सामंतवाद, डॉ रामशरण शर्मा पृ. 2

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.net